शिक्षकों की अनैतिकता

❑ अशोक चसवाल

मैं जब एक शिक्षक का मकान खोज रहा था तो वहां सड़क पर घूमते हुए मैंने एक सज्जन से पूछा कि क्या आप उक्त शिक्षक को जानते हैं ? उस सज्जन ने बताया कि इस पते पर तो एक व्यापारी रहता है । यह सुनकर मैं असमंजस में पड़ गया और मैंने उस सज्जन से कहा कि पता तो यही है । लेकिन जब मैंने उस शिक्षक के मकान की ओर नजर दौड़ाई तो वहां काफी संख्या में कार, स्कूटर व साइकिल खड़े थे । अभी मैं सोच ही रहा था कि क्या देखता हूँ कि शिक्षक महोदय के घर से विद्यार्थियों का एक समूह बाहर निकला । लेकिन मैं यह देख कर अचम्भे में पड़ गया कि अभी पहला विद्यार्थियों का समूह पूरी तरह बाहर निकला भी

नहीं था कि ऐसा एक और समूह उसी घर के आगे रुका व शिक्षक महोदय के घर में सभी विद्यार्थी प्रवेश कर गये । अपने मन की व्याकुलता मिटाने के लिए मैंने एक विद्यार्थी से पूछा कि आप उक्त शिक्षक के पास इतनी संख्या में किसलिए आए हैं ? उस विद्यार्थी ने बताया कि हम सब वहां ट्यूशन पढ़ने आते हैं । यह सुनकर मेरा माथा ठनका ।

एक समय था जब संत कबीर का यह दोहा 'गुरू गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाँय । बलिहारी गुरू आपने जिन गोबिंद दिओ मिलाए', पूर्णतया चरितार्थ था । जब शिक्षक को एक आदर्श माना जाता था । शिक्षक का पद एक सम्मानीय पद होता था । विद्यार्थी श्रद्धा व प्रेम से अपने शिक्षक के चरणों का स्पर्श करते थे । शिक्षक व विद्यार्थी में एक ही रिश्ता था और वह रिश्ता था-नि: स्वार्थ भाव से शिक्षा देने व ग्रहण करने का । शिक्षक का कार्य एक पथ-प्रदर्शक का होता था । वह अपने विद्यार्थियों को अंधेरे से प्रकाश की ओर ले जाता था व उसका विद्यार्थियों के साथ आत्मीयता व स्नेह का संबंध होता था । वह अपने विद्यार्थियों को अच्छी तरह समझता था व उनकी समस्याओं को नि: स्वार्थ भाव से दूर करता था । अभिभावक अपने बच्चों को पूर्णतया शिक्षक को समर्पित करके निश्चिन्त हो जाते थे, उन्हें यह विश्वास होता था कि शिक्षक उन्हें उच्च विचार व स्वच्छ चरित्र वाले, नेक व मेहनती इन्सान बनायेंगे।

लेकिन जैसे जैसे समय गुजरता गया, सन्त कबीर के दोहे का स्वरूप भी बदल गया । आज वास्तविकता यह है कि शिक्षक अपने आदर्श को छोड़ चुके हैं । आज का विद्यार्थी अपने शिक्षक के चरणों का स्पर्श करने में एक शर्म–सी महसूस करता है । उसका विश्वास शिक्षक के ऊपर से पूर्णत्तया उठ गया है क्योंकि आज का शिक्षक एक शिक्षक न रहकर एक व्यापारी बनकर रह गया है। जहां तक स्कूली शिक्षा का प्रश्न है, यह तो पूर्णतया एक व्यवसाय बनकर रह गयी है। स्कूल का समय समाप्त होने के तुरन्त बाद ही पूरी कक्षा को ट्यूशन पढ़ायी जाती है। विद्यार्थियों को जबरदस्ती ट्यूशन पढ़ने के लिए बाध्य किया जाता है । यहां तक कि उन्हें इतना ज्यादा दण्डित किया जाता है कि उनके पास पिटाई से बचने के लिए सिर्फ एक ही रास्ता रह जाता है और वह है ट्यूशन । शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों का शोषण सरासर अनैतिक है, क्योंकि ऐसे शिक्षक विद्यार्थी की मजबूरी का फायदा उठाते है। । शिक्षकों ने विद्यार्थियों की मानसिकता ही कुछ ऐसी बना दी है कि बिना ट्यूशन के वे पास ही नहीं हो सकते व लगभग ऐसी ही मानसिकता विद्यार्थियों के अभिभावकों की भी बन गई है । विद्यार्थियों को प्रायोगिक विषयों में अच्छे अंक देने का लालच दिया जाता है । अगर वे इस लालच में नहीं फंसते हैं तो उन्हें प्रायोगिक विषयों या तिमाही व छ:माही परीक्षाओं में कम अंक दिए जाते हैं । विद्यार्थियों के मन में यह बात बिठा दी जाती है कि बिना ट्यूशन के उनका पाठ्यक्रम पूरा नहीं हो सकता । शिक्षक को कक्षा में 35 मिनट पढ़ाने का समय पहाड़-सा लगता है । वह कक्षा में एकाग्र होकर इसलिए नहीं पढ़ाता क्योंकि उसके मन में यह प्रश्न रहता है कि अगर वह मेहनत व ईमानदारी से पढ़ाएगा तो उसके पास ट्यूशन कौन पढ़ने आयेगा ? इसलिए वह कक्षा में अपना अधिकतर समय विद्यार्थियों को दंड़ित करने व उन्हें ट्यूशन के लिए फंसाने में व्यतीत करता है । उन्हें यह एहसास कराया जाता है कि वे पढ़ाई में कमजोर हैं । शिक्षक विद्यार्थियों को अपने घर पर बुलाता है, विशेषतौर पर उस समय जब वह टयूशन पढ़ा रहा होता है । घर बुलाकर उसे बताया जाता है कि ग्रुप में एक जगह खाली है, परन्तु पैसे एडवांस में देने पड़ेंगे। विद्यार्थी के साथ शिक्षक भाव ताव करता है । जब तक विद्यार्थी टयूशन नहीं पढ़ता तब तक शिक्षक व विद्यार्थी दोनों में तनाव की स्थिति बनी रहती है।

शिक्षक के चेहरे पर एक जहरीलापन झलकता रहता है । विद्यार्थी की स्थिति महाभारत के अभिमन्यु से भी बदतर होती है। आखिरकार हारकर विद्यार्थी को न चाहकर भी शिक्षक के चक्रव्यूह में फंसना पड़ता है । वाह रे कलियुगी शिक्षक ! तुमने तो महाभारत को भी पीछे छोड़ दिया, अकेले ही 20-30 अभिमन्युओं को अपने चक्रव्यूह में फंसा लिया । कितना बड़ा जादूगर बन गया है आज का शिक्षक ! जो विद्यार्थी शिक्षक के पास अन्य विद्यार्थियों को ट्यूशन के लिए लेकर आते हैं शिक्षक या तो उन्हें मुफ्त पढ़ाता है या उन्हें ट्यूशन फीस में छूट देता है । यही शिक्षक जिसे कक्षा में 35 मिनट पढ़ाने में कठिनाई होती है, थकावट हो जाती है, सिर में दर्द होने लग जाता है, अपने घर में सुबह 5.00 बजे से रात्रि 10.00 बजे तक विद्यार्थियों के समूह को ट्यूशन पढ़ाता है । यह तो विद्यार्थियों की मजबूरी होती है कि उन्हें रात को सोना होता है। अगर भगवान ने रात न बनाई होती तो शायद शिक्षक महोदय 24 घंटे ट्यूशन पढ़ाते ही नजर आते । अगर आप किसी शिक्षक से ड्यूटी टाइम में मिलने जायें तो शायद आपको वो कक्षा तो दूर स्कूल/कालेज में भी नहीं मिलेंगे । लेकिन यह सत्य है कि आप कभी भी उनके घर चले जाइए, आपको वो विद्यार्थियों से घिरे हुए मिलेगें । उस समय शिक्षक महोदय विद्यार्थियों को ऐसी मुस्तैदी से पढ़ाते हैं मानो उनका जीना मरना इस काम की सफलता पर निर्भर है ।

आज शिक्षक ने स्वयं के लिए भी सहायता-पुस्तकों(गाइड वगैरह) का सहारा लेना शुरू कर दिया है । विद्यार्थियों को पाठ्य-पुस्तकें पढ़ने पर ज्यादा बल दिया जाता है । शिक्षक पाठ्य-पुस्तकें पढ़ाने का कष्ट नहीं करता । यहां यह प्रश्न उठता है कि शिक्षक विद्यार्थियों को सहायक पुस्तकें पढ़ने की राय क्यों देता है ? इसका

कारण यह है कि यहां भी चकाचौंध ने शिक्षक को अंधा कर दिया है । आज का शिक्षक एक कमीशन एजेन्ट भी बन गया है। यह विडम्बना नहीं तो और क्या है कि जिस तरह सहायक पुस्तकों में प्रश्न होते हैं, ठीक उसी तरह प्रश्न परीक्षा में पूछे जाते हैं। यहां तक कि आमतौर पर या कई बार पूरा प्रश्न-पत्र ही सहायक-पुस्तकों में से ही होता है । यदि कोई प्रश्न सहायक-पुस्तक में से नहीं आता तो इसे पाठ्यक्रम से बाहर बताया जाता है ।

आज महाविद्यालयों में भी यही स्थिति है । महाविद्यालयों में भी शिक्षक व शिक्षा दोनों का ही स्तर काफी गिर चुका है। शिक्षक खुल कर अपने पद का दुरूपयोग कर रहा है । ट्यूशन पढ़ाना गैर कानूनी है फिर भी शिक्षक खुले आम ट्यूशन पढ़ाकर कानून की धज्जियां उड़ा रहा है । जो शिक्षक स्वयं ही गैरकानूनी कार्य करेगा वह अपने विद्यार्थियों से भला क्या उम्मीद लगा सकता है ? शिक्षक इतना भी नहीं सोचते कि जो विद्यार्थी आर्थिक स्तर पर कमजोर है वह ट्यूशन पढ़ने के लिए पैसा कहां से लाएगा। आज शिक्षक पैसा कमाने में व भौतिक वस्तुओं के लालच में इतना फंस चुका है कि उसे अब किसी गरीब विद्यार्थी की विवशता पर भी तरस नहीं आता। मालूम होता है ऐसे शिक्षकों ने कहीं गहरी चोट खायी है जिसका बदला वे बेचारे विद्यार्थियों से ले रहे हैं । अगर शिक्षक अपनी ट्यूशन का लालच छोड़ दें तो शायद आर्थिक स्तर पर कमजोर विद्यार्थी भी अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकें । लेकिन आज के शिक्षक से ऐसी उम्मीद करना व्यर्थ है। वह तो विद्यार्थियों का खून चूस चूस कर अपना घर भर रहा है व अपनी सभी मर्यादाओं को लांघ कर पूर्णतया निर्लज्ज हो गया है । आज के समय में वैसे ही शिक्षा इतनी मंहगी हो गई है कि अभिभावक अपने पेट पर गांठ बांध कर बच्चों को शिक्षा दिलाते हैं और ऊपर से ये शिक्षक महोदय जिन्हें सरकार ने इतने अच्छे वेतनमान दिए हैं फिर भी यह भूखे भेड़िये की तरह विद्यार्थियों के अभिभावकों को बोटी बोटी नोचने में जुटे हुए हैं। आज शिक्षक ने अपनी पहचान खो दी है ।

विद्यालयों व महाविद्यालयों के प्राचार्य भी इन कार्यों में पीछे नहीं हैं। उनकी छत्रछाया में ही सब कुछ होता है। जो शिक्षक अपने प्राचार्य की चापलूसी करते हैं वो एक राजा की तरह रहते हैं, उन पर कक्षा में जाने या न जाने में पाबंदी नहीं रहती । क्या प्राचार्य को यह बात ज्ञात नहीं होती कि उनके विद्यालय/महाविद्यालय में क्या हो रहा है? उन्हें सब कुछ पता होता है क्योंकि सभी गलत कार्य उनके चहेते शिक्षक ही करते हैं। शिक्षा संस्थान के प्रशासन की पूर्ण जिम्मेदारी प्राचार्य की ही होती है । आज यह कितनी शर्मनाक बात है कि प्राचार्य भी अपने पद की गरिमा का दुरूपयोग कर रहे हैं । ऐसे प्राचार्य की वजह से प्रशासन तो कमजोर होता ही है, साथ-साथ विद्यार्थियों की शिक्षा का भी हनन होता है । ऐसे प्राचार्य व इनके इशारे पर काम करने वाले शिक्षक कुछ विद्यार्थियों को गुमराह करते हैं, उन्हें कक्षा में जाने न जाने की पूरी छूट दी जाती है व उन्हें परीक्षा में नकल का आश्वासन देकर पास करवाने का भी वचन दिया जाता है । ऐसे आश्वासन देकर इन विद्यार्थियों का भविष्य अन्धकारमय बनाने में शिक्षकों का पूरा हाथ होता है । आज का शिक्षक एक शिक्षक न होकर एक भक्षक बन गया है । शायद ये शिक्षक इस देश का भविष्य उज्जवल नहीं देखना चाहते । अगर मांझी स्वयं ही नाव को डुबाने में लगा हो तो उसे कौन पार लगा सकता है ।

आज महाविद्यालयों में भी यही स्थिति है । महाविद्यालयों में भी शिक्षक व शिक्षा दोनों का ही स्तर काफी गिर चुका है । शिक्षक खुल कर अपने पद का दुरूपयोग कर रहा है । ट्यूशन पढ़ाना गैर कानूनी है फिर भी शिक्षक खुले आम ट्यूशन पढ़ाकर कानून की धज्जियां उड़ा रहा है । जो शिक्षक स्वयं ही गैरकानूनी कार्य करेगा वह अपने विद्यार्थियों से भला क्या उम्मीद लगा सकता है ? शिक्षक इतना भी नहीं सोचते कि जो विद्यार्थी आर्थिक स्तर पर कमजोर है वह ट्यूशन पढ़ने के लिए पैसा कहां से लाएगा। आज शिक्षक पैसा कमाने में व भौतिक वस्तुओं के लालच में इतना फंस चुका है कि उसे अब किसी गरीब विद्यार्थी की विवशता पर भी तरस नहीं आता।

आज जो शिक्षा के क्षेत्र में नकल का साम्राज्य फैला हुआ है उसके लिए भी पूर्णतया ये शिक्षक ही जिम्मेवार हैं । ये शिक्षकों के पैसा बटोरने का एक और तरीका है कि विद्यार्थियों को नकल करवाई जाए। क्या ऐसा संभव है कि शिक्षक के न चाहने पर परीक्षा केन्द्र में नकल हो ? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता । अगर शिक्षक चाहे तो एक विद्यार्थी भी नकल नहीं कर सकता, लेकिन यहां विडम्बना तो इस बात की है कि पूरा का पूरा परीक्षा केन्द्र ही नकल में एकाग्र होकर जुटा होता है। जो शिक्षक उस समय डयूटी पर होते हैं उनकी स्वयं की जेबें नकल सामग्री से भरी होती हैं । जब कोई उड़नदस्ता आता है तो विद्यार्थियों को पहले ही सूचित कर दिया जाता है कि अगर कोई पर्ची (नकल सामग्री) है तो उसे हमें दे देवें, उड़नदस्ता जाने के बाद उन्हें नकल सामग्री लौटा दी जाएगी । यह हद नहीं तो और क्या है कि श्याम-पट्ट पर पूरा का पूरा प्रश्न-पत्र हल कर दिया जाता है व बोलकर नकल करवायी जाती है । लगता है शायद इन शिक्षकों की आत्मा मर चुकी है । ये कैसा मालिक है जो अपने घर में अपने

बच्चों से ही चोरी करवा रहा है ? ये कैसा मॉडर्न शिक्षक है ? और ये ादा गिर जाता है, वहां विकास नहीं विनाश होता है और इस विनाश के जिम्मेवार शिक्षक ही होंगे । ऐसा देश ज्यादा समय तक आजाद रह सकेगा, इस पर भी संदेह होने लगता है ।

अगर हम विश्वविद्यालयों की ओर चलें तो यहां का स्वरूप ही कुछ और है । यहां तो और भी चार चांद लगे हुए हैं । क्या व्यवस्था है यहां की ? यहां तो एक नेटवर्क सक्रिय है । जो शिक्षक प्रश्न-पत्र बनाते हैं, वही शिक्षक प्रायोगिक व अन्य परीक्षायें लेते हैं और विडम्बना तो इस बात की है कि वही शिक्षक उत्तर-पुस्तिका को भी जांचते हैं । इस नेटवर्क का विश्वविद्यालय की परीक्षाओं पर पूरा नियन्त्रण होता है व यह नेटवर्क जाने कितने ही विद्यार्थियों का हक छीनता है व उन्हें मायूसी के अंधेरे में धकेलता है । यह खेद की बात है कि कई बार कुलपति भी इन सभी क्रियाओं के प्रति आंख बंद किए रखते हैं । जहां तक कुलाधिपति महोदय का प्रश्न है वे तो केवल विश्वविद्यालय में भोज व विश्राम के लिए ही कभी कभार आते हैं । कुलाधिमान विश्वविद्यालय के शिक्षा-स्तर को सुधारने के लिए कोई हस्तक्षेप नहीं करते । उनके लिए तो विश्वविद्यालय एक पर्यटक स्थल बनकर ही रह गया है । आज हमारे देश में शिक्षा पर बेहिसाब पैसा खर्च हो रहा है लेकिन फिर भी निरक्षरता दूर नहीं हो रही है । जहां शिक्षा के रक्षक ही खोखली शिक्षा को बढ़ावा देंगे, वहां सच्ची शिक्षा कैसे पनप सकती है ?

यहां तक कि निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, निदेशक माध्यमिक उच्चतर शिक्षा व निदेशक, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय भी शिक्षा के इस गिरते हुए स्तर से परिचित होने के बाद भी कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं । हमारे शिक्षामंत्री का हाल तो देखिए ! वो तो जनता को राजनीति की शिक्षा देने में इतने व्यस्त हैं कि उन्हें लगता है कि शिक्षामन्त्री का अर्थ है कि राजनीति का शिक्षामंत्री ।

आज शिक्षक ट्यूटशन के माध्यम से लाखों करोड़ों रुपया जमा कर रहे हैं । इस गैरकानूनी ढंग से कमाए गए पैसे का कोई हिसाब किताब ही नहीं है। जहां शिक्षकों के वेतनमानों में बढ़ोत्तरी होती है वहां ये शिक्षक ट्यूशन फीस में बढ़ोत्तरी कर देते हैं । जहां ये प्रत्येक विद्यार्थी से 400 रुपये महीना लेते थे, अब उन्होंने 500 महीना लेना शुरू कर दिया है । अब प्रश्न यह उठता है कि हमारे देश का आयकर विभाग इस ओर ध्यान क्यों नहीं दे रहा है ? जबकि ट्यूशन द्वारा विद्यार्थियों से धन ऐंठना सरासर गैरकानूनी है, जुल्म है। लेकिन फिर भी आयकर विभाग चुप्पी साधे हुए है । क्या आयकर विभाग की यह जिम्मेवारी नहीं बनती कि वह शिक्षकों द्वारा गैरकानूनी ढंग से कमाए गए धन पर कर लगाएं ? लेकिन विडम्बना तो इस बात की है कि एक तो ट्यूशन गैरकानूनी है, दूसरा इस द्वारा कमाए गए काले धन को जब्त करना तो दूर इस पर कर भी नहीं लगाया जाता । यहां तो वही कहावत चरितार्थ है कि एक तो चोरी ऊपर से सीनाजोरी ।

जब शिक्षकों से ट्यूशन के बारे में बातचीत की गई तो उनका यह मानना है कि ट्यूशन का कार्य उनके आदर्शों के अनुकूल है। उनका मानना है कि आज के समय में पैसे से बड़ी कोई ताकत नहीं है । पैसे का ही मानसम्मान है । उनका मानना है कि ऐसा आदर्श ही किस काम का जिससे घर की आर्थिक स्थिति ही बिगड़ जाए । आज के माहौल में पैसे की कद्र है, विद्या की नहीं । उनका मानना है कि विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं के लिए विद्यार्थी स्वयं ट्यूशन रखते हैं, क्योंकि उन्हें अपना भविष्य उज्जवल बनाना होता है, इसमें शिक्षकों का क्या दोष है । आज समाज में जो शिक्षा के क्षेत्र में गिरावट आई है उसके लिए शिक्षक अपने आपको जिम्मेवार नहीं मानते, उनका मानना है कि इस गिरावट में विद्यार्थियों व उनके अभिभावकों का भी पूरा हाथ है व उनके हिसाब से केवल शिक्षकों को दोषी नहीं ठहराया जा सकता । समाज का मौजूदा ढांचा व इसमें व्याप्त वातावरण इस गिरावट के लिए जिम्मेवार है। इस बात में आंशिक सच्चाई है । लेकिन शिक्षक इसे ढाल बनाकर अपने दोष से मुक्त नहीं हो सकते । अगर आज शिक्षक मेहनत व ईमानदारी के साथ पढ़ाने के लिए तैयार हो जाएं व धन ऐंठने व भौतिक वस्तुओं का लालच छोड़ दें तो शायद विद्यार्थियों को नकल व ट्यूशन करने की आवश्यकता ही न पड़े । जबकि शिक्षकों को इतना अच्छा वेतन मिलता है कि वे अपना घर परिवार अच्छी तरह से चला सकते हैं व अपना स्तर समाज में बनाए रख सकते हैं, उस पैसे से क्या फायदा जिससे मानसम्मान ही नहीं रहे ? अगर शिक्षक चाहे तो वह शिक्षा के आदर्शों को विकृत होने से बचा सकता है। अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब विद्यार्थी मजबूरन भी अपने शिक्षक के चरणों को स्पर्श नहीं करेंगे। शिक्षकों को चाहिए कि वे अपने पद की गरिमा को बनाए रखें, शिक्षा संस्थान के प्रति निष्ठावान रहें, समाज के प्रति उत्तरदायी हों, विद्यार्थियों के भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए तत्पर रहें व देश के प्रति ईमानदार व देशभक्त बने रहें । तभी आज का शिक्षक अपना मान सम्मान वापिस प्राप्त कर सकेगा । ◆